आक्टोबर १९२७

Yearly Subscription. Rs. 2-8-0.

सम्पादक—श्रीनाथसिंह

Block by I. P. Work

5 as. per copy

वार्षिक मूल्य २॥)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग से प्रकाशित

प्रति संख्या ।-)

विषय-सूची।

चित्र-सूची।

ग्राहकों को सूचना

पाठकों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हमने भारतवर्ष के प्रायः प्रत्येक बड़े स्टेशन पर 'बाल-सखा' के मिलने का प्रबन्ध कर दिया है। यात्रा करते समय कहीं भी एक प्रति मोल लेकर अपना समय आनन्द के साथ काटिए।

मैनेजर बाल-सखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

बालकों के पढ़ने योग्य कहानियों की पुस्तकें

यह एक मनोरञ्जक बालोपयोगी बँगला-पुस्तक का हिन्दी-अनुवाद है। इसकी कहानियाँ पढ़ते समय बालक हँसी के मारे लोट-पोट हो जाते हैं। नाम ही देखिए—बैंगन सुन्दरी, बन्दर की बुद्धि, बादशाही अँगूठी, नक़द सौदा, बाज़ीगर का बन्दर, रीछ की दुम और भाग्य-गीत। यही ७ मनोरञ्जक कहानियाँ इसमें छापी गई हैं। पुस्तक बालकों के लिए बड़ी उत्तम है। कई [लेखक—श्री मोहनलाल और शोभनलाल गङ्गोली] चित्र भी लगाये गये हैं। कवर बहुत ही सुन्दर और मनोमोहक है। प्रत्येक माता-पिता को चाहिए कि इस पोत की माला को देकर अपने बच्चों को सन्तुष्ट करें। मूल्य ॥।) बरह आने।

फव्वारा

यह बालकों के पढ़ने योग्य मनोरंजक सचित्र कहानियों का सङ्ग्रह है। कहानियाँ कई रंगों में बढ़िया कागज़ पर बड़े बड़े अक्षरों में छापी गई हैं। पुस्तक का कोई भी पृष्ठ ऐसा नहीं है जिसमें चित्र न हो, सभी कहानियाँ सचित्र हैं। कहानियों को बालक बड़े चाव के साथ सरलतापूर्वक पढ़ सकते हैं। फव्वारे की कहानियों के फुहारे ही देखिए कि कैसी मनोरंजक कहानियाँ इसमें छापी गई हैं—श्यामा और राधा, कौशल और टीपू, इकन्नी की कहानी, खिलौने का बाग़, प्यारा बबुआ, सबसे अधिक सुखी कौन है? स्वर्ग की सैर, चिड़ियों का राज्य, श्यामा और श्यामा चिड़िया, गुड़िया का विवाह, लिखने का खेल, रमेश और खरगोश, बातचीत, पंचायत, मस्तराम, स्कूल, अगर मगर, जैसे को तैसा और दोस्ती। यही २० बढ़िया कहानियाँ इसमें छापी गई हैं। पुस्तक का कवर बड़ा सुन्दर और मनमोहक है, पुस्तक बालकों के लिए बड़ी ही सुन्दर और उपयोगी है। आजही एक प्रति मँगा कर अपने बच्चों का मनबहलाव कीजिए। पुस्तक की उपयोगिता, सजावट और मज़बूत जिल्द आदि देखते हुए इसका मूल्य १) एक रुपया कुछ भी नहीं है।

पता—मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

* बाल-सखा-पुस्तक-माला *

बाल-भारत (दो भाग)

महाभारत की लम्बी चौड़ी तथा सुनी हुई कथाएँ इस पुस्तक में संक्षिप्त रूप में, बालकों के रुचिकर सरल भाषा में लिखी गई हैं। बच्चे महाभारत जैसे बृहत् ग्रन्थ की बड़ी बड़ी कथाएँ पढ़ने में समर्थ नहीं हो सकते। इसलिए वे इस छोटी सी पुस्तक से ही उस ग्रन्थ का बहुत कुछ आनन्द प्राप्त कर सकेंगे। इन कथाओं से जो शिक्षा मिलती है उसका वर्णन भी प्रत्येक कथा के अन्त में कर दिया गया है। इसके पढ़ने से बालक-बालिकाओं को बहुत लाभ होने की आशा है। मूल्य प्रत्येक भाग का ॥=), और दोनों भागों का १।)

बाल-भागवत (दो भाग)

जो लोग श्रीकृष्णचन्द्र की लीलाओं के प्रेमी हैं और श्रीमद्भागवत की कथा के रसिक हैं उन्हें यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। श्रीकृष्ण भगवान् की अनेक लीलाओं की कथाओं का इसमें समावेश किया गया है। श्रीमद्भागवत का इसे संक्षिप्त रूप समझिए। वेदव्यासजी की अनूठी उक्तियाँ, अनुपम शिक्षाएँ और सुन्दर कथाएँ यदि आपको, थोड़े समय में, पढ़नी हों तो आप इस पुस्तक को मँगाइए। ऐसी उत्तम पुस्तक का मूल्य सिर्फ़ १।=) [प्रथम भाग का ॥=), दूसरे भाग का ॥)]।

बाल-रामायण

रामायण के सातों काण्डों की कथा इस पुस्तक में, साररूप से, सीधी सादी भाषा में लिखी गई है। लिखने का ढँग इतना अच्छा है और भाषा ऐसी बढ़िया है कि सरकार ने सिविल सर्विस के परीक्षार्थियों के पढ़ने के लिए इसे नियत कर दिया है। अपने बालकों के हाथ में यह पुस्तक अवश्य देनी चाहिए। मूल्य केवल ॥=)

बाल-गीता

श्रीकृष्ण भगवान् ने अर्जुन के निर्बल हृदय को गीता सुना कर सबल कर दिया था। यह गीता के ज्ञान का ही प्रताप था कि युद्धक्षेत्र से अलग होने पर तुले हुए अर्जुन ने डट कर युद्ध किया और अपने शत्रुओं को खोज खोज कर मारा। इस पुस्तक में उसी गीता-ग्रन्थ का सार बड़ी ही सरल भाषा में लिखा गया है। इसका मनन करने से आत्मा पवित्र और बलिष्ठ होती है। मूल्य केवल ।॥)

मिलने का पता—मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

बाल-स्मृतिमाला

संस्कृत में १८ स्मृतियां हैं जिनमें भिन्न भिन्न ऋषियों और धर्माचार्यों ने मनुष्यों की भलाई के लिए सांसारिक नियमों का निर्देश किया है और धर्म की व्याख्या की है। धर्मशास्त्र की मर्यादा जानने के लिए स्मृति-शास्त्र का जानना परमावश्यक है। इस पुस्तक में उन सब पुस्तकों का सार सङ्कलित किया गया है। इसमें बतलाये गये नियमों का पालन करके अपने बच्चों का जीवन सुधारिए और उन्हें धर्मिष्ठ बनाने का उद्योग कीजिए। मूल्य केवल ॥=)

बाल-पुराण

पुराण अठारह हैं। सर्वसाधारण को यह नहीं मालूम कि किस पुराण में किन किन विषयों का वर्णन है। अतः सबके सुबीते के लिए, हमने समग्र पुराणों का यह सार-सङ्ग्रह करा दिया है। इसके पढ़ने से मालूम हो जाता है कि किस पुराण में कौन सी कथा है। इसके सिवा पुराणों के अध्यायों और श्लोकों की संख्या भी लिख दी गई है। मूल्य केवल ।=)

बाल-मनुस्मृति

आज-कल आर्य-सन्तान अपनी प्राचीन धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक रीति-रस्मों को न जान कर कैसे घोर अन्धकार में धँसती चली जा रही है सो किसी भी विचारशील से छिपा नहीं है। इसलिए इसमें 'मनुस्मृति' में से उत्तम उत्तम श्लोकों को छाँट छाँट कर उनका सरल हिन्दी में अनुवाद लिखाया गया है। आशा है, आर्य्य-सन्तान इसे पढ़ कर धार्मिक और दृढ़ आस्तिक बनेगी। मूल्य केवल ।=)

बाल—भोजप्रबन्ध

भोजप्रबन्ध नामक ग्रन्थ संस्कृत में है। उसमें धारानगरी के प्रसिद्ध नरपति राजा भोज के विद्याप्रेम-सम्बन्धी कई आख्यान हैं। राजा भोज का विद्याप्रेम किसी से छिपा नहीं है। आख्यान मनोरञ्जक तो हई हैं, उनसे शिक्षा भी कम नहीं मिलती। इस पुस्तक में उसी भोजप्रबन्ध का सार लिखा गया है। मूल्य केवल ॥=)

बाल—हितोपदेश

यदि आप अपने बच्चों की बुद्धि प्रखर करना चाहते हैं और उन्हें नीति की शिक्षा दे कर मित्रता के लाभों से परिचित करना चाहते हैं तो उन्हें यह पुस्तक पढ़ने को दीजिए। इसके पढ़ने से बालकों को ज्ञात हो जायगा कि शत्रुओं के जाल से किस तरह दूर रहना चाहिए और यदि उसमें फँस ही गये तो किस तरह बचना चाहिए। सौ बात की बात यह कि इसके पढ़ने से उन्हें कर्त्तव्य का ज्ञान हो सकता है। यह पुस्तक बड़े काम की है। मूल्य ॥)

मिलने का पता—मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

बाल-हिन्दी-व्याकरण

व्याकरण का विषय कठिन होता है। जल्दी सबकी समझ में नहीं आता। बालकों को तो इसके समझने में और भी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। और यह प्रकट ही है कि बिना व्याकरण के ज्ञान के शुद्ध-शुद्ध लिखना-पढ़ना नहीं आ सकता। इस पुस्तक में व्याकरण के कठिन नियम भी बड़ी सरलता से समझाये गये हैं। यह पुस्तक स्कूल के भी विद्यार्थियों के बड़े काम की है। मूल्य केवल ॥)

बाल-स्वास्थ्य-रक्षा

प्रत्येक गृहस्थ को इसकी एक कापी अपने घर में रखनी चाहिए। बालकों को तो आरम्भ से ही इस पुस्तक को पढ़ कर स्वास्थ्य-सुधार के उपायों का ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए। इसमें बतलाया गया है कि मनुष्य किस प्रकार रह सकता है। इसमें प्रतिदिन के बर्ताव में आनेवाली खाने की चीज़ों के गुण-दोष भी अच्छी तरह बताये गये हैं। इसे पढ़ने से मालूम हो जायगा कि स्वास्थ्य किस प्रकार सुधर सकता है। मूल्य केवल ॥=)

सचित्र बाल-आरब्योपन्यास

(चार भाग)

संसार भर में ऐसी कोई पुस्तक नहीं जिसमें अरेबियन नाइट्स की तरह सुन्दर मनोमोहक कहानियाँ हों। देश-विदेश में सर्वत्र उक्त पुस्तक की कहानियों की चाह है। इस पुस्तक को बालकोपयोगी बनाने के लिए हमने इसमें से अयोग्य कहानियाँ अलग करवा दी हैं। इस रूप में अब यह स्त्रियों और बालक-बालिकाओं के हाथ में निःसङ्कोच दी जा सकती है। जो लोग सुरुचि का ख़याल करके इन क़िस्सों का आनन्द न प्राप्त कर सकते थे उनके लिए अब बड़ा सुबीता हो गया। मूल्य प्रत्येक भाग का ॥=), पूरे सेट का २॥)

मिलने का पता—मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

बाल-निबन्धमाला

इस पुस्तक में निबन्ध लिखने की रीति का वर्णन किया गया है और कोई ३५ शिक्षादायक विषयों पर, बड़ी सुन्दर भाषा में, निबन्ध भी लिखे गये हैं। बालकों के लिए तो यह पुस्तक उत्तम गुरु का काम देगी। इस पुस्तक से बालक निबन्ध लिखना तो सीख ही लेते हैं साथ ही अनेक उपयोगी विषयों का ज्ञान भी उनको प्राप्त हो जाता है। मूल्य केवल ॥=)

बाल-कालिदास

या

कालिदास की कहावतें

महाकवि कालिदास की उक्तियाँ बड़ी अनोखी हैं, बड़ी अनमोल हैं। वे उक्त कवि के अनेक ग्रन्थों में बिखरी पड़ी हैं। उन्हीं ग्रन्थों से सङ्ग्रह करके वे इस पुस्तक में छापी गई हैं। ऊपर मूल श्लोक संस्कृत में है और नीचे उसका हिन्दी में अर्थ तथा भावार्थ है। बालकों को ये कहावतें मुखाग्र करा दी जायँगी तो वे चतुर होंगे और समय समय पर उन्हें बड़ा काम देती रहेंगी। मूल्य केवल ।=)

बाल-शिक्षा

यह पद्य-पुस्तक छोटे छोटे बालकों के लिए बड़ी ही उपयोगी और हिन्दी-साहित्य में एक ही है। इसके प्रत्येक पद्य से बालकों को अनमोल शिक्षा मिलती है। बच्चों को कुछ कविता याद करने की आदत होती है। उन्हें ऊट-पटाँग कविता याद करने देने के बजाय यदि इस पुस्तक के पद्य कण्ठ कराये जायँ तो बड़ा लाभ हो। इसमें की कविताएँ बड़ी ही रोचक और सरल हैं। मूल्य केवल =)

मिलने का पता—मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

श्रीरामचन्द्रजी का समुद्र-दमन ।

वर्ष ११] आक्टोबर १९२७—आश्विन १९८४ [संख्या १०

बाल-विनय।

(१)

विनय यही है हे परमेश्वर! गीत तुम्हारे गाऊँ मैं।
बैठा अपने दिल में स्वामी हरदम तुमको पाऊँ मैं॥
पुत्र तुम्हारा कहलाऊँ मैं काम तुम्हारे आऊँ मैं।
जितने जीव रचे हैं तुमने सबको सुख पहुँचाऊँ मैं॥

(२)

मस्तक मेरा तुम्हें झुका हो उस पर हो सेवा का भार।
कैसा ही दुख का सागर हो उसे करूँ मैं छिन में पार॥
एक फूल सा हो यह जीवन लाल लाल हो जिसमें प्यार।
अच्छे कामों की सुगन्ध से भर दूँ मैं सारा संसार॥

(३)

किसी वेष में आओ स्वामी तुम्हें सदा मैं लूँ पहिचान।
अंधे की लकड़ी बन जाऊँ मूरख का बन जाऊँ ज्ञान॥
ऐसा बल दो रोते के मुख में भर दूँ मीठी मुस्कान।
कभी नहीं उससे मुख मोड़ूँ जो करने की लूँ मैं ठान॥

(४)

है यह भारत देश हमारा इसको भूल न जाऊँ मैं।
इसके नदी पहाड़ वनों पर पक्षी सा मँडराऊँ मैं॥
इसका मान न जाये चाहे अपना शीश कटाऊँ मैं।
बाद तुम्हारे हे परमेश्वर ! इसका ही कहलाऊँ मैं॥

'श्रीश'

———

मधुमक्खी से चार बातें।

विपिन ने मधुमक्खी को भन भन करते सुना। उसने अपनी बहिन शान्ता को बुलाया और कहा—"शान्ता, देखती रहो यह उड़ कर कहाँ जाती है। फिर हम दोनों इससे दो चार बातें पूछेंगे। मुझे मधुमक्खी बड़ी अच्छी लगती है। मुझे इसका कुछ हाल भी मालूम हो जाय तो बड़ा अच्छा हो। शान्ता ने कहा—"यह तो मैं भी चाहती हूँ, इसे बैठने दो"।

"देखो ! वह बैठ गई। चलो, चलें" विपिन बोला।

आँगन के पास ही एक छोटा सा फूल था। इसी के चारों ओर भन भन करती मक्खी इस पर बैठ गई। ज्योंही ये भाई-बहिन वहाँ पहुँचे वह उड़ने को तैयार हो गई।

विपिन बोला—"कृपाकर बैठी रहो। हम तुम्हारी बातें सुनना चाहते हैं।" शान्ता ने भी कहा—"ज़रा ठहर जाओ।"

मधुमक्खी फूल पर से उठी और फिर "भन भन" करने लगी। विपिन ने समझा, "अच्छा अच्छा" कह रही है। इसलिए उसने भी कहा—"कृपा है।"

शान्ता ने भी कहा—"कृपा है।"

विपिन ने कहा—"तुम तो बड़ी मेहनत करती हो।"

मधुमक्खी बोली—"हाँ मुझे बहुत सा शहद तैयार करना है इसलिए फूलों में से केसर जमा कर रही हूँ"।

शान्ता ने कहा—"आहा शहद तो मुझे भी बड़ा अच्छा लगता है।"

मधुमक्खी बोली—"ज़रूर अच्छा लगता होगा। लेकिन हम शहद की मक्खियाँ वसन्त और गरमियों भर सारे दिन इसलिए काम नहीं करती रहती हैं कि तुम हमारे शहद को खा जाओ।"

"शहद तुम्हारे काम का तो होता ही नहीं होगा" विपिन बोला।

मधुमक्खी को हँसी आई। उसने कहा—"मैं तो सोचती हूँ शहद हमारे बड़े काम का है। हमारे छोटे छोटे बच्चों का तो यही भोजन है।"

शान्ता ने कहा—"क्या अच्छा होता जो मैं भी तुम्हारी बच्ची होती। मैं भी शहद खा खाकर बड़ी होती।"

मधुमक्खी ने जवाब दिया—"क्या ख़ूब ! मगर हमारे बच्चों को थोड़ा ही थोड़ा शहद मिलता है।"

विपिन—"तो तुम इतना क्यों जमा करती हो।"

मधुमक्खी—"हमारे बच्चे होते भी कितने हैं ?"

शान्ता—"हर एक बच्चे को कितना मिला करता है?"

"जितना एक कोठरी में आता है।"

"अरे तब तो तुम्हारे एक एक बच्चे को बहुत मिलता होगा" यह कह कर विपिन की आँखें हँसने लगीं।

मधुमक्खी ने कहा—"हमारी कोठरी इतनी बड़ी नहीं होती जितनी तुम लोगों की हुआ करती है। हमारे बच्चे जितने छोटे होते हैं उतनी ही छोटी कोठरियाँ भी होती हैं।"

मधुमक्खी ने देख लिया कि उन बच्चों की समझ में यह बात नहीं आई। इसलिए वह झट बोल उठी, "अच्छा तो यह होता कि तुम दोनों मेरे घर पर चलते तो मैं तुम्हें सब समझा देती।" बच्चे ख़ुशी के मारे नाचने लगे। शान्ता उमर में तो छोटी थी मगर बड़ी समझदार थी। लड़कियाँ लड़कों से वैसे ही ज़्यादा समझदार हुआ करती हैं। उसने विपिन के कान में कहा—"अगर इसका घर दूर हुआ तो हमें अपने घर आने को देर हो जायगी और हम थक भी जायँगे।"

मक्खी ताड़ गई। बच्चों की बात में छल नहीं होता इसलिए उनकी बात को सब समझ जाते हैं। वह बोली—"मेरा घर तुम्हारे खेत के नीचे एक पेड़ की सबसे नीची डाल पर है। क्या तुम चल सकोगे?" तब तो विपिन और शान्ता फूले न समाये। आगे आगे मक्खी उड़ती गई और पीछे पीछे बच्चे दौड़ पड़े। पाँच ही मिनट में मक्खी के घर पहुँच गये।

मक्खी ने और और मक्खियों से कहा। सबने साथ ही उड़ उड़ कर भन भन करके कहा, "आओ! आओ! तुम्हें देख कर बड़ी ख़ुशी हुई।" जब कोई अपने घर आता है तो इसी तरह स्वागत करते हैं।

बच्चों ने मधुमक्खियों का छत्ता देखा। इस पर सैकड़ों मक्खियाँ काम कर रही थीं। लेकिन इस समय सब उड़ गईं कि बच्चों को सब साफ़ साफ़ दिखाई दे।

तब उनकी मित्र मधुमक्खी ने उन्हें समझाया कि देखो इस छत्ते में कई मोम की दीवारों से छोटे छोटे छ पहलू कमरे बनाये गये हैं। इन्हीं के अन्दर बच्चों के लिए हम लोग शहद जमा करती हैं। अब तुम समझ लो कि एक एक बच्चे को हम कितना शहद दिया करती हैं। लेकिन इतना शहद एक बच्चे के लिए काफ़ी होता है।

शान्ता ने पूछा—"क्या तुम लोगों को इस छत्ते के बनाने में बहुत काम करना पड़ता है?"

मधुमक्खी ने उत्तर दिया—"हाँ, काम बहुत करना पड़ता है। हमारी 'रानी' को छोड़ कर और सब काम करती हैं।"

"रानी! तुम्हारी रानी कौन होती है?" विपिन ने पूछा।

"इस छत्ते में जितनी मक्खियाँ काम कर रही हैं उन सबकी मालकन।"

शान्ता ने पूछा, "क्या वह भी और मधुमक्खियों की तरह ही होती है?"

"कुछ ज़्यादा नहीं। तुम उसे देख कर ही पहचान लोगे। वह हम सबसे बड़ी होती है।" विपिन ने कहा—"ज़रा मुझे दिखा दो।"

"अरे तुम उसे ऐसे नहीं देख सकते, कभी कभी सैकड़ों मक्खियाँ साथ साथ उड़ा

करती हैं। उस समय अगर तुम पास हो तो तुम देखोगे कि जब वह बैठती हैं तो अंगूर का सा गुच्छा बन जाता है। उन सबकी अगुवा जो होती है वही हमारी 'रानी' है। अच्छा, अब मैं केसर जमा करने जाती हूँ। मुझे बहुत देर होगई है। अगर हमारे पास बच्चों के खाने को ज़्यादा शहद जमा हो गया तो तुम्हें मैं फिर बुला लाऊँगी और ख़ूब खिलाऊँगी।" इतना कहकर वह मधुमक्खी उड़ गई और विपिन व शान्ता भी घर लौट चले।

हमें अब तक पता नहीं चला कि उस मधुमक्खी ने फिर उन बच्चों की दावत की या नहीं। बालको क्या तुम्हें पता है?

'नन्दन' बी० ए०

बिल्ली!

(१)

ओ री! बिल्ली बड़ी चिबिल्ली।
क्या तूने देखी है दिल्ली॥
क्यों करती है म्याऊँ म्याऊँ।
क्या मैं चला यहाँ से जाऊँ॥

(२)

आँगन में घर में छप्पर पर।
देखा तुझे लगाते चक्कर॥
पेड़ों पर भी चढ़ जाती तू।
नहीं पकड़ में है आती तू॥

(३)

सीख अगर यह मैं भी जाता।
तो मुन्नी को ख़ूब छकाता॥

मैं भगता वह पकड़ न पाती।
हाथ जोड़ तब मुझे बुलाती॥

(४)

आ! आ! दूध पिलाऊँ तुझको।
जो खा ख़ूब खिलाऊँ तुझको॥
तुझे कहूँगी बिल्लो रानी।
सुनना घर में बैठ कहानी॥

(५)

साथ हमारे चलकर पढ़ना।
वहाँ न पर छप्पर पर चढ़ना॥
नहीं गुरु जी चिढ़ जायेंगे।
तुझे पीटने को धायेंगे॥

लालसखा

अपना घर साथ लेकर चलनेवाला जानवर।

अगर तुम कभी किसी नदी में नहाने के लिए गये होगे तो तुमने एक बड़ा भारी और बड़ा ही अजीब जानवर देखा होगा, यह जानवर ऐसा अजीब होता है कि यह अपने घर को सदा अपने साथ लिये फिरा करता है। यह घर भी बड़ा ही अजीब होता है। यह इतना कड़ा होता है जितना कि एक लोहे की कड़ाही। इस घर का नीचे का हिस्सा इतना पतला तथा मुलायम होता है कि अगर ऊपर और नीचे के हिस्से का मिलान किया जाय तो बड़ा अचम्भा होता है। ऊपर तथा नीचे के भागों के बीच में एक छोटा सा हिस्सा खुला रहता है जिसमें से यह जानवर अपना मुँह तथा अगले दो पैर निकाले रहता है और पीछे भी इसी प्रकार का हिस्सा होता है

जिसमें से यह अपने पिछले पैर निकाले रहता है। अगर तुम इसे छुओ तो यह अपना मुँह झटपट अन्दर कर लेता है और ऐसा मालूम होता है कि इसके मुँह है ही नहीं, इसे पानी में थोड़े से चने डाल कर बुलाओ और फिर इसे ध्यान से देखो। इसकी कैसी भद्दी छोटी छोटी आँखें हैं। यह चने बड़े मज़े से खाता है। अगर तुम शरद-ऋतु में इसे देखना चाहो तो तुम शायद ही इसे देख पाओ क्योंकि इस ऋतु में यह बिलकुल एकान्त स्थान में एक कोने में जा छिपता है। इसे एक छोटा सा छोटा जानवर भी दौड़ में हरा सकता है। जब यह मर जाता है तो बड़े काम आता है। इसके ऊपर के भाग के छोटे छोटे बक्स, कंघियाँ इत्यादि बनाये जाते हैं। अगर ज़रा ध्यान लगाओ तो तुम शीघ्र मालूम कर लोगे। शीघ्र बताओ तो यह कौन सा जानवर है।
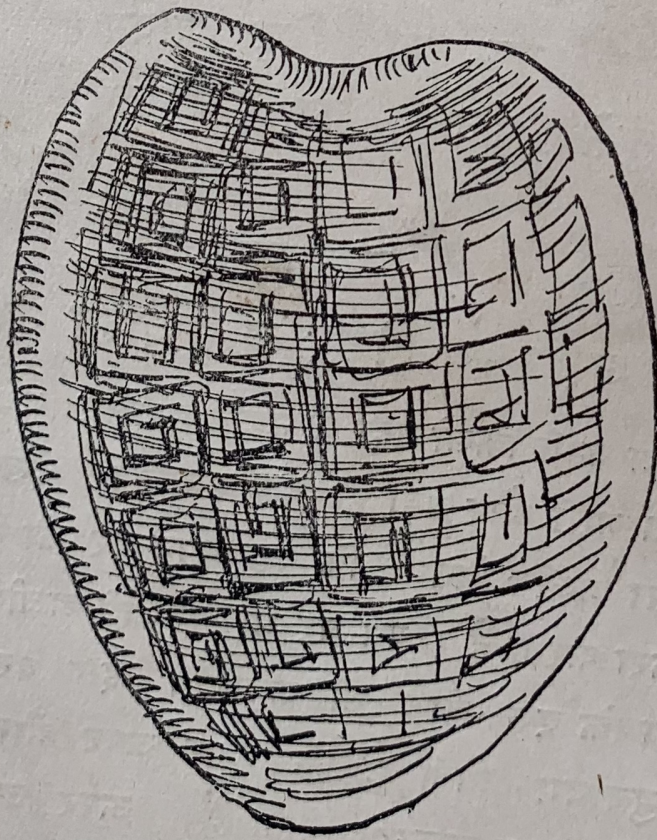
नागेन्द्रनाथ शर्म्मा

मछुवा कैसे राजा बना और फिर कैसे मछुआ हो गया।

किसी देश में एक मछली पकड़नेवाला रहता था। वह बेचारा बड़ा ग़रीब था। वह और उसकी स्त्री एक टूटी फूटी झोंपड़ी में रहते थे। बेचारा आप तो भलामानस था, किन्तु उसकी स्त्री बड़ी लालची थी।

एक दिन जब मछुवा मछलियाँ पकड़ रहा था, तो उसके जाल में एक सुनहरी मछली, जो कि बड़ी सुन्दर थी, फँस गई। बस मछुवे का चेहरा खिल उठा। किन्तु उस मछली ने बड़ी दीनता से कहा—"मुझ पर दया कर मुझे छोड़ दो। उसके बदले में जो कुछ माँगना चाहते हो माँग लो।"

इस पर मछुवे ने कहा—"ज़रा ठहरो, मैं अपनी स्त्री से पूछ कर बताऊँगा।" वह झट घर गया और थोड़ी ही देर पीछे लौट आया और कहने लगा—"ऐ मछली, यदि तू हम पर प्रसन्न हुई है तो हमें एक सुन्दर घर रहने को दे दे।" मछली ने कहा—"अच्छा, ऐसा ही होगा।" अब मछुवा और उसकी स्त्री अच्छे सुन्दर घर में मज़े से दिन काटने लगे। कुछ दिन पीछे मछुए की स्त्री ने अपने मन में सोचा—"क्या ही अच्छा हो यदि मैं रानी बन कर रहूँ और बीसों दासियाँ मेरी टहल करें।" बस

इसी विचार में मग्न होकर वह मछुवे के पास गई और कहने लगी—"तुम उस

मछली के पास जाओ, और कहो कि मुझे इस देश की रानी बना देवे।" वह मछुवा नदी के तट पर जाकर कहने लगा—"मछली, ओ सुन्दर मछली! मेरी स्त्री की यह इच्छा है कि मैं इस देश का राजा बनूँ और वह रानी हो जाय।" मछली ने उत्तर दिया, "अच्छा, ऐसे ही होगा।"

जब वह घर लौटा तो अपने घर के स्थान पर एक बड़ा महल पाया। उसमें कई नौकर चाकरों के कारण बहुत चहल पहल हो रही थी। बीसों दासियाँ, रानी (मछुवे की स्त्री) की सेवा में लगी थीं और रानी साहिबा एक सुन्दर रेशमी साड़ी पहिने महल में विराजमान थीं।

मछुवा यह सब देख कर चकित हो गया। उनके दिन अब और भी सुख चैन से कटने लगे। कहाँ तो वह एक झोंपड़ी में रहा करता था और कहाँ राजा बन गया। इससे वह अपने आपको बड़ा भाग्यवान् समझता था।

इसी तरह सुख-शान्ति में कुछ वर्ष कट गये। एक दिन रानी के मन में कुछ और नया विचार आया। सब कुछ होते हुए भी रानी के चित्त में लालच की आग जल रही थी।

रानी ने जाकर राजा से कहा,—"क्या ही अच्छा होता यदि मैं सूर्य और चन्द्रमा की रानी बन जाती। फिर तो मैं एक सीढ़ी पृथ्वी से चन्द्रमा को लगवाती और दूसरी सूर्य को। जब तेज धूप पड़ती तो चन्द्रमा में जाकर रहते। जब जाड़ा लगता तो सूर्य में चले जाते। बस तुम एक बार और उस मछली के पास जाओ और मेरी इच्छा सुनाओ। अब की बार मछुवे ने बीबी को बड़ा समझाया कि बहुत लोभ करना ठीक नहीं। कहीं इस सब सुख आराम से भी हाथ न धो बैठें। लेकिन रानी ने अपनी हठ न छोड़ी। तब लाचार मछुवे को जाना ही पड़ा।

बहुत डरते डरते उसने मछली को पुकारा और अपनी स्त्री की इच्छा फिर कह सुनाई। इस बार मछली ने कहा—"तुमने मेरे साथ भलाई की थी उसके बदले से भी अधिक तुम मुझ से पा चुके हो। बहुत लालच अच्छा नहीं होता। इससे मैं और कुछ नहीं कर सकती। तुम बहुत लोभी हो। तुम अपने लोभ के कारण से ही

सब कुछ खो रहे हो । वापिस लौट जाओ और अपने महल के स्थान पर वही पुरानी झोपड़ी पाओगे । इतना कह कर मछली ग़ायब हो गई । फिर तो मछुआ बहुत गिड़गिड़ाया, किन्तु उसकी कुछ भी न चली । अन्त में वह लौट आया और अपनी स्त्री को वही मैले कुचैले वस्त्र पहने हुए उसी कुटिया में बैठे पाया ।

अब उसकी स्त्री भी निराश होकर रो रही थी । और पछता रही थी किन्तु फिर पछताये होत क्या, जब चिड़िया चुँग गई खेत । उस दिन से वह स्त्री सुधर गई और उसका फिर कभी लोभ करने का साहस न हुआ ।

कमला

——

शालामार बाग़ ।

दिल्ली की तरह लाहौर ने भी बड़ा ज़माना देखा है । मुग़ल-बादशाहों की बनवाई हुई यहाँ कई सुन्दर इमारतें और बाग़ हैं । इनमें से एक शालामार बाग़ भी है । यह एक बहुत ही सुन्दर और मशहूर बाग़ है । इसको शाहजहाँ बादशाह ने ६ लाख रुपये में बनवाया था ।

आगरे के ताजमहल की तरह लाहौर के शालामार बाग़ को देखने के लिए दूर दूर से लोग आते हैं ।

कहा जाता है कि पहले उसके सात तख़्ते थे; लेकिन अब तो तीन ही तख़्ते

रह गये हैं। चार तख़्ते जिनके नाम 'अंगूरी बाग़,' 'इनायत बाग़,' 'महताबी बाग़,' और 'गुलाबी बाग़' थे, अब नहीं रहे।
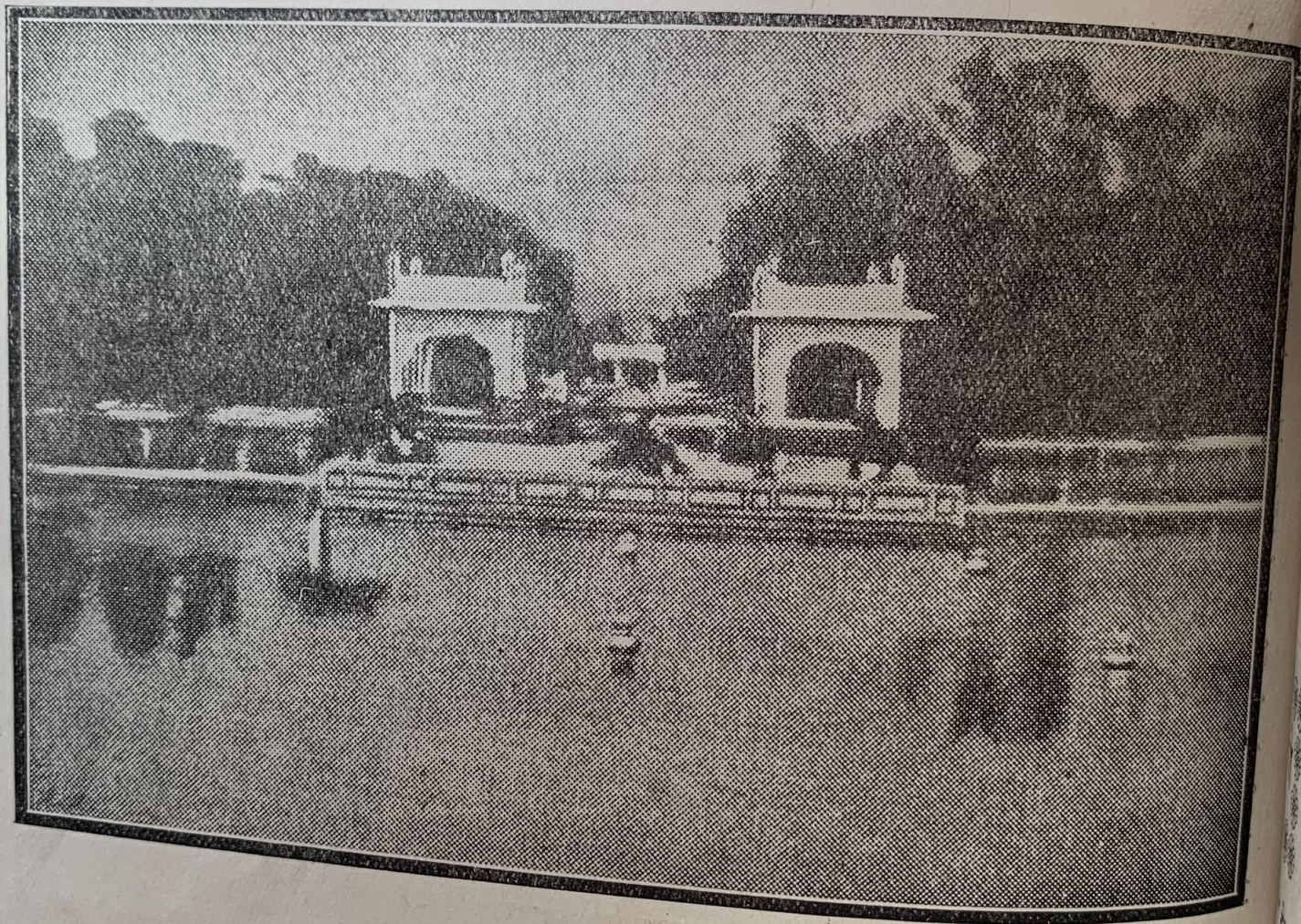
शालामार बाग़, लाहौर।

तीन तख़्तों में से पहले का नाम "फ़ैज़बख़्श" का बाग़ है। यह तख़्ता बड़े दरवाज़ा से शुरू होता है और बारहदरी तक चला जाता है।

बारहदरी के नीचे दूसरा तख़्ता है जिसको "हयातबख़्श" का बाग़ कहते हैं। दूसरे तख़्ते के नीचे तीसरा तख़्ता है जो "फ़रहबख़्श का बाग़" के नाम से मशहूर है। इसी बाग़ से महताबी बाग़ को रास्ता जाता है।

हर साल मार्च के महीने में शालामार बाग़ में एक बहुत बड़ा मेला होता है जिसको "चिराग़ों का मेला" कहते हैं। इस मेले में बड़ी भीड़ होती है और ख़ूब चहल पहल रहती है।

शालामार बाग़ के अन्दर जो इमारतें बनी हुई हैं वे बहुत ही खूबसूरत और एक से एक बढ़कर हैं। ख़ास कर 'शाही हमाम', 'संगमरमर का तख़्त', 'सर्द ख़ाना', 'बारहदरियाँ', 'झरनें', नहरें और फ़व्वारे देखने की चीज़ें हैं।

यह बाग़ लाहौर शहर से ६ मील के फ़ासले पर है। गरमी के दिनों में इस बाग़ में बड़ी रौनक़ रहती है। मर्द, औरत और बच्चे सभी सैर सपाटे के लिए इस बाग़ में आते हैं और ख़ुशियाँ मनाते हैं।

लड़को ! तुम भी अगर कभी लाहौर जाओ तो इस बाग़ को ज़रूर देखना।

मणिराम गुप्त

क्या तुम पढ़ सकते हो ?

गोपाल ने एक कविता लिखी थी। लल्लू ने पहुँच कर हर दूसरी लाइन का अन्तिम शब्द मिटा दिया। कविता नीचे दी जाती है। लल्लू ने जो शब्द मिटा दिये थे उनकी जगह ख़ाली है। बालको ! क्या तुम इस कविता को पढ़ सकते हो ?

बड़ी धूप है चला न जाता।
मा मुझको मँगवा दे—॥
उसको ले जाऊँगा मेला।
बिना गुरु का मैं हूँ—॥
साथ सभी लड़के जायेंगे।
ख़ूब मिठाई वे—॥
लौटेंगे हम लड़के सारे।
जब निकलेंगे नभ में—॥
लायेंगे मिट्टी का भालू।
खाएगा वह रोटी—॥

नाचेगा वह घर में छम छम।
जब बोलेगा डमरू—॥

छाता मैं रख दूँगा घर में।
लेटूँगा मैं जाकर—॥

ले फिर उसे चलेगी नानी।
जब बरसेगा झम झम—॥

लक्ष्मीकान्त वर्मा

उपद्रवी लड़का।

मोहन नाम का एक लड़का बड़ा उपद्रवी था। जब कभी वह बाहर खेलने को जाता तब उसके उपद्रव के कारण किसी न किसी से उसकी लड़ाई हो जाती थी। जिसके बदले या तो उसको मार खानी पड़ती; या उसके माता-पिता को उलहने सुनने पड़ते थे। घर में भी वह, कभी अपने छोटे भाई को मार देता, कभी वस्तुओं को जहाँ-तहाँ रख देता या फोड़ डालता था; इसलिए उसके माता-पिता उससे सदा दुखी रहा करते थे। पिता ने उसे बहुत समझाया तो भी उस लड़के की आदत नहीं सुधरी।

एक दिन वह पिता की ग़ैरहाज़िरी में घर की आलमारी खोल उसमें की किताबें निकाल निकाल कर देखने लगा। लड़का उपद्रवी तो था ही, किताबें, बार बार निकालने तथा ठीक जगह पर न रखने के कारण छिन्न भिन्न हो गईं।

पिता जब घर आया और भोजन कर चुकने के कुछ समय पीछे, कुछ पढ़ने की इच्छा से उसने आलमारी खोली; तो देखता क्या है कि उसमें की सब किताबें छिन्न-भिन्न हो गई हैं। पिता को क्रोध तो बहुत आया, परन्तु करे क्या? लाचार हो चुप रहा; क्योंकि वह जानता था कि यह काम सिवाय मोहन के और किसी का नहीं है।

इतवार के दिन जब मोहन कहीं खेलने चला गया तब पिता ने उसका बस्ता

खोल उसमें की किताबें तथा उसके कोट-टोपी भी जहाँ तहाँ रख दिये। दूसरे दिन जब पाठशाला का समय आया, तब मोहन भोजन कर चुकने के पश्चात्, अपने कपड़े रखने के स्थान पर गया। जब वहाँ उसे कपड़े नहीं दिखे तो वह घर में इधर-उधर ढूँढ़ने लगा। पाठशाला का घंटा बज चुका था, इसलिए वह घबराहट के साथ, यह कहता हुआ कपड़ा ढूँढ़ने लगा कि किसने हमारा कोट छिपा दिया? मेरी टोपी कहाँ है? कुरता कहाँ है? इत्यादि इसी खोजाखोजी में उसने अपनी छोटी बहिन सरला को दो तीन चपतें भी लगा दीं; क्योंकि वह ढूँढ़ते समय उसके सामने आ गई थी। कपड़े ढूँढ़ते ढूँढ़ते मोहन को आध घंटा हो गया। ख़ैर किसी प्रकार उसे सब कपड़े मिल गये। वह उन्हें पहिन अपना बस्ता लेने गया। वहाँ क्या देखता है? बस्ता खुला है! उसमें की पुस्तकें नहीं हैं! एक तो कपड़ा ढूँढ़ते ढूँढ़ते उसको देरी हो गई थी; दूसरे बस्ते में किताबें नहीं थीं, फिर देरी से पाठशाला में जानेवाले बालकों की क्या दशा होती है? यह भी वह जानता था। इसलिए वह लड़का बहुत घबड़ाया। रोता हुआ माता के पास गया और पूछने लगा—मेरी किताबें कहाँ हैं? माता ने कहा—मैं नहीं जानती। ऐसा कह वह अपने काम काज में लग गई। पिताजी से पूछने को वह बैठकख़ाने की ओर दौड़ता गया; परन्तु उसका पिता कहीं बाहर चला गया था। लाचार हो वह अपनी माता के पास आकर फिर रोने लगा। अपने पुत्र को रोता देख माता का जी भर आया और वह सामान ढूँढ़ने लगी। माता की सहायता से पढ़ने के सब सामान मिल गये। मोहन उन्हें बस्ते में जैसे तैसे सँभाल पाठशाला की ओर जल्दी जल्दी पैर बढ़ाये जाने लगा। वह रास्ते में सोचता जाता था कि आज

गुरुजी मुझे क्या कहेंगे ? मैं उन्हें क्या उत्तर देऊँगा ? बस, आज मुझे सज़ा अवश्य मिलेगी ; इत्यादि । चलते चलते पाठशाला पास आगई । लड़का डरता हुआ अन्दर गया और अपने गुरुजी को प्रणाम कर अपनी जगह पर बैठ गया ।

जब गुरुजी ने देरी से आने का कारण पूछा तो लड़के ने सब हाल सच सच बतला दिया । गुरुजी ने कहा कि मोहन तुम्हारी रोज़ यही हालत रहती है । कभी किताब भूल गये, कभी स्लेट भूल गये । तुम अपना सामान सँभाल कर क्यों नहीं रखते ? तुम्हें दो बेत का दण्ड दिया जाता है । अब से अपनी चीज़ें सँभाल कर रखना ।

छुट्टी होने पर लड़का घर आया । जब उसका पिता बाहर से आया; तब लड़का कहने लगा कि पिताजी ! आज न जाने किसने मेरे पढ़ने के सामान तथा कपड़े छिपा दिये थे; जिनके ढूँढ़ने में मुझे पाठशाला जाने में बहुत देर होगई और गुरुजी ने मुझे दो बेत की सज़ा दी । पिता ने पूछा—तुम्हें मार खाने का बहुत दुख तो नहीं है ? लड़के ने उत्तर दिया कि मुझे मार खाने का दुख तो है ही पर उस सामान छिपानेवाले के ऊपर बहुत क्रोध आता है । पिता ने कहा, यदि तुम्हारा सामान छिपानेवाला आदमी मिल जाय तो क्या तुम उसे सज़ा दोगे ? लड़के ने कहा, मैं बिना बदला लिये न छोड़ूँगा । पिता ने कहा—अच्छा तो तुम्हीं बताओ कि उस आलमारी की किताबें बखेरनेवाले को कौन सी सज़ा होनी चाहिए । यह सुन लड़का बहुत लज्जित हुआ । तब पिता ने समझाया कि देखो ! हमें दूसरों के जिन कामों से दुःख होता है वैसे ही दूसरों को भी हमारे उन्हीं कामों से दुःख होता है । यदि तुम आलमारी की किताबें न बखेरते तो तुम्हारे बस्ते की किताबें जहाँ तहाँ नहीं रखी जातीं । न पाठशाला जाने में तुम्हें देरी होती और न बेतों की सज़ा मिलती । बुरे कामों का फल बुरा होता है, और अच्छे कामों का फल अच्छा होता है । अपने पिता की बातें सुनकर मोहन ने निश्चय किया कि मैं आज से ऐसा काम कभी नहीं करूँगा जिससे किसी दूसरे को दुख पहुँचे । और उस दिन से उसने उपद्रव करना छोड़ दिया ।

श्रीअङ्गदसिंहजी वर्मा

भागाम्मा और हैदरअली।

प्यारे बालको! आओ आज तुम्हें हैदरअली की कथा सुनावें। हिन्दुस्तान के दक्षिण में मैसूर एक बड़ा राज्य है, बहुत वर्ष पहले इस राज्य के देवली नामक ग्राम में भागाम्मा नामक एक ब्राह्मणी रहती थी। उसके यहाँ हैदरअली नामक एक लड़का नौकर था। वह उस ब्राह्मणी के बच्चों को खिलाया करता था। इसके बदले में भागाम्मा उसे पेट भर रोटी खिला

दिया करती थी। हैदरअली बड़ा ही लड़ाका और खिलाड़ी था। वह उस ब्राह्मणी के बच्चे को कभी कभी इधर-उधर भी घुमाने ले जाया करता था। भागाम्मा उसे अपने पुत्र के समान प्यार किया करती थी और हैदरअली भी उसे माता के समान पूजता था। वह यह जानता ही नहीं था कि डर किस चिड़िया का नाम है। जब कभी भागाम्मा को हैदर नहीं दिखाई पड़ता तो वह उसे फ़ौरन ढुँढ़वाती और भोजन करवाती थी। जब वह

बड़ा हो गया तब उसने राज्य की सेना में नौकरी कर ली। वह वीर और चालाक तो था ही, कुछ ही दिनों में बढ़ता बढ़ता सेनापति हो गया। और फिर अन्त में मैसूर का बादशाह बन बैठा। भागाम्मा के यहाँ रोटियों पर बसर करनेवाला बालक आज के दिन इतना बड़ा राजा हो गया, लेकिन वह अपनी माता को नहीं भूला। उसे अपनी माता के दर्शन की बड़ी इच्छा हुई। बीस ऊँटों पर अशर्फ़ियाँ, और कई ऊँटों पर रेशमी कपड़े और तरह तरह के गहने रख कर मैसूर का बादशाह हाथी के सोने के हौदे पर बैठकर जिसमें रत्न जड़े थे, माता के दर्शन करने की इच्छा से रवाना हुआ।

हौदा सूर्य के समान चमक-दमक रहा है। महावत हाथी को बड़े ही
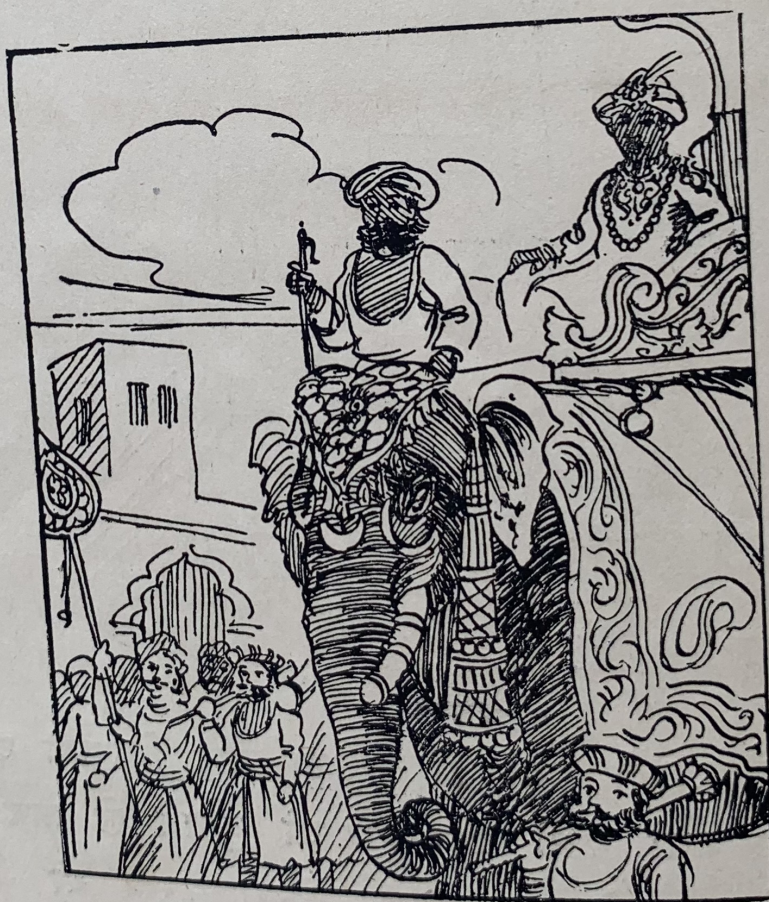
घमंड के साथ हाँक रहा है। कई एक रईस और सरदार उसके साथ हैं और सब अचरज में पड़े हैं कि राजा कहाँ जा रहे हैं। लो, अब सम्राट् की सवारी भागाम्मा के दरवाज़े पर पहुँच गई है। राजा हाथी से नीचे

उतर पड़े और किवाड़ खटखटाये। अन्दर से आवाज़ आई, "कौन है!" राजा ने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया, "आपका पुराना सेवक हैदर"। सब रईस और सरदार आपस में कहने लगे कि बादशाह पागल तो नहीं हो गये हैं? जब भागाम्मा ने किवाड़ खोले तो वह हैदर को नहीं पहचान सकी क्योंकि वह राजसी ठाठ में था! अपनी माता को देखते ही बादशाह ने उसके कमल-चरणों पर सर नवाया। फिर हाथ जोड़ कर अपनी माता से कहा—"माताजी! इस अल्प धन को स्वीकार कीजिए"। यह सुन कर भागाम्मा की आँखों में प्रेम की धारा निकल पड़ी और हैदरअली को कहने लगी, "बेटा! तुम फूलो फलो। तुम मैसूर के ही नहीं बल्कि भारतवर्ष के बादशाह हो जाओ"।

बालको तुमको ऊँचे पद पर पहुँचने पर भी हैदरअली के समान नम्र होना चाहिए, और अपने माता-पिता व भला चाहनेवालों को कभी नहीं भूलना चाहिए।
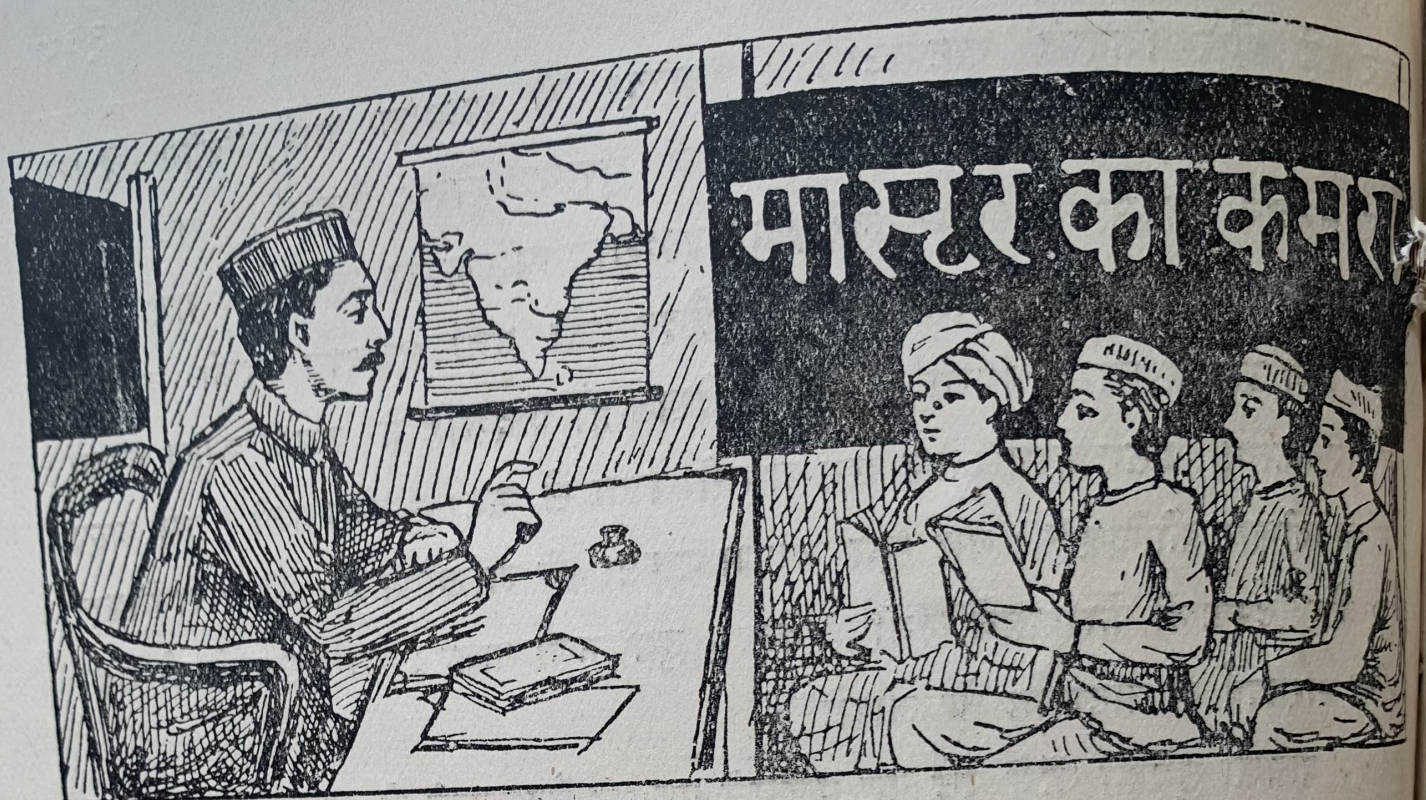
दियासलाई का जहाज़ बनाना ।

दियासलाई के दो ख़ाली डिब्बों को लो। उनके भीतर के हिस्सों को, जिसमें कि सलाइयाँ रखी जाती हैं, बाहर निकाल लो। एक को फेंक दो और दूसरे को

दोनों डिब्बों के ऊपर के हिस्सों में खोंस दो जैसा कि चित्र में दिखाया गया है। काग़ज़ के दो छोटे चौकोर टुकड़ों को लो, उनके बीच से दो सलाइयों को इस तरह निकालो जैसा कि तुम चित्र में देखते हो। इन दोनों सलाइयों को दोनों डिब्बों पर सूराख़ करके गाड़ दो। बस जहाज़ तैयार हो गया। इसे पानी पर रख दो। पाल में धीरे धीरे हवा करने से जहाज़ चलने लगेगा।

———

सूरज का पिल्ला ।

किसी गाँव में एक रहा करता था कोई कोरी राम ।

सोंटा लिये अक़्ल के पीछे फिरना था बस उसका काम ॥

मतलब यह वह बेवकूफ़ था समझ नहीं कुछ पाता था ।

लाल बुझक्कड़ भी उसके आगे जाते शरमाता था ॥

पढ़ा नहीं था भैंस बराबर था उसको काला अच्छर ।

पर अपने को विद्वानों का गिनता था अगुआ अक्सर ॥

बच्चो वह जो कुछ करता था अजब तरह का होता था ।

बात अनोखी सबसे यह थी बहुत अधिक वह सोता था ॥

सूरज छिपते ही बिस्तर में मुँह ढककर पड़ जाता था ।

ख़र्राटे भरने लगता था लम्बी तान लगाता था ॥

आठ बजे दिन से पहले उठने का लेता नाम न था ।

सच तो यह है सोने के सिवाय उसको कुछ काम न था ॥

दिन रहते ही सो जाने से दिन चढ़ने पर उठने से।
उस कोरी को काम पड़ा था नहीं कभी भी दीपक से॥
जैसे कोई जान नहीं सकता बिन खाये गुड़ है क्या।
वैसे ही वह बिना जलाये क्या समझे दीपक है क्या॥
एक बार वह कोरी पहुँचा दावत खाने को ससुराल।
शाम हुई पर दिया न उसको लोगों ने सोने तत्काल॥
कोशिश तो बहुतेरी की उसने सो जाने को झटपट।
पर न एक भी चली वहाँ के लड़के थे बेहद नटखट॥

इतना शोर मचाया कोरी सोने नहीं ज़रा पाया।
बैठा रहा मार कर मन को और बहुत ही पछताया॥
सन्ध्या-समय सास ने उसकी ज्योंही दिया जलाया एक।
भौचक सा रह गया लगा वह करने सोच विचार अनेक॥

नहीं चिराग़ कहीं देखा था कोरी ने इसके पहले ।
सोचा यह सूरज का पिल्ला है इसको जाऊँ घर ले ॥
बेवकूफ़ था उसने उसको तुरत चुराने की ठानी ।
देखो अब वह आगे करता है क्या बच्चो शैतानी ॥
जब सब लोग लगे ख़र्राटे भरने अपने बिस्तर में ।
ले चिराग़ को छिपा दिया उसने चुपके से छप्पर में ॥
पर जैसे ही लगा लेटने लपटें दौड़ीं चारों ओर ।
लगे दौड़ने लोग बुझाने होने लगा गाँव में शोर ॥
लगा पूछने कोरी सबसे ज़ोर ज़ोर चिल्ला चिल्ला ।
हाय बताओ ! कौन गया ले मेरा सूरज का पिल्ला ॥
बड़ी देर में जाना लोगों ने उसके पिल्ले की बात ।
किया गाँव से बाहर फ़ौरन दिया निकाल रात ही रात ॥

श्रीशान्त्यानन्द

———

पुराना नौकर ।

रामदयाल के पिता का कानपुर में बड़ा कारोबार था। लेकिन वह सब एक-दम चौपट हो गया। रामदयाल को, जो कलकत्ते में था, इस विपत्ति की ख़बर देने के लिए पड़ोसियों ने एक पुराने होशियार नौकर को भेजा। उसको अच्छी तरह समझा दिया गया कि वह सारी बातें एक-दम न कह बैठे जिससे रामदयाल का दिल टूट जाय।

नौकर कलकत्ते पहुँचा। रामदयाल ने पूछा, "कुशल अच्छी है"

नौकर—"हज़ूर सब अच्छी है। सिर्फ़ आपके पिता की देह छूट गई है।"

राम०—"हैं! क्यों?"

नौकर—"आपकी माता की मृत्यु के दुःख में।"

राम०—"माता की मृत्यु कैसे हुई?"

नौकर—"आग में जल गईं।"

राम०—"कैसे जल गईं ?"

नौकर—"घर में आग लग गई थी।"

राम०—"घर में आग कैसे लगी ?"

नौकर—"आपके कुत्ते ने लगाई।"

राम०—"कुत्ते ने कैसे लगाई ?"

नौकर—"कुत्ते की पूँछ को आग ने पकड़ा और वह घर में घुस आया।"

राम०—"कुत्ते की पूँछ को आग ने कैसे पकड़ा ?"

नौकर—"कुत्ता अस्तबल में था और अस्तबल में आग लग गई थी।"

राम०—"अस्तबल में आग कैसे लग गई ?"

नौकर—"आपके रुई का कारख़ाना जल उठा था।"

राम०—"कारख़ाने में कैसे आग लगी ?"

नौकर—"कारख़ाने का बड़ा इन्जिन फूट पड़ा था।"

'नन्दन' बी० ए०

———

नये साहब।

भों भों आज गया साहब बन।
मेरा रस्ता छोड़ो फ़ौरन ॥
खट खट करते बूट हमारे।
हटो नहीं जाओगे मारे ॥

साबुन रोज़ लगाता हूँ मैं।
नित्य सैर को जाता हूँ मैं
अब आती ही होगी मोटर।
हटो नहीं खाओगे ठोकर ॥

———

कहो कान में जो हो कहना ।
चिड़िया आती है चुप रहना ॥

अच्छा लो कहता हूँ भाई ।
घर में चलो मिठाई आई ॥
बस बस बहुत न ज़्यादा बोलो ।
अभी न थोड़ा भी मुँह खोलो ॥

———

खड़े हुए हैं पहन लँगोटा ।
लिये हुए हैं लम्बा सोंटा ॥

उसे मारने को दौड़ेंगे ।
जो इनको वह देगा छोटा ॥

———

अनोखा पलँग।

(पिछले महीने से आगे।)

तीसरी परी भी एक शहर में पहुँची। वहाँ उसने देखा कि एक सौदागर की लड़की जो, रोज़ एक साधु के पास जाया करती थी, उस दिन उसके पास देर में पहुँची। साधु ने पूछा, "तू आज देर से क्यों आई।" सौदागरज़ादी बोली, "महाराज! आज मेरा पति अपने मित्र के सहित यहाँ आया है। मैं उसकी ख़ातिरदारी करने लगी। इसी से देर हो गई। "साधु ने पूछा, "तू मेरी है कि अपने पति की?" वह बोली, "तुम्हारी।" साधु बोला, "यदि तू मेरी है तो जा और अपने पति का सिर काट ला।" सौदागरज़ादी उसका सिर काट कर थाली में ले आई और साधु से बोली, "बाबाजी, मैं लाई हूँ।" साधु ने धूनी से चिमटा निकाल कर मारते हुए कहा, "जब तू अपने पति की न हुई तो मेरी कहाँ से होगी।" वह चिल्ला कर भागी और घर में जाकर चिल्लाई, "पति-मित्र ने पति को मार डाला।" पति-मित्र गिरफ़्तार कर लिया गया। परी लौट आई। उसने सब बातें परियों से कह कर कहा, "यदि राजा साहब जागते हों तो सवेरे, जब वह पकड़ कर आवे, तो उसे छोड़ कर उसके बदले पाखण्डी साधु को फाँसी दी जावे।"

बड़ी देर हो गई। चौथी परी न बोली तो और परियों ने कहा, "बहन, तुम क्यों नहीं बोलतीं?" परी बोली, "क्या कहूँ, आज सवेरे राजा साहब की मृत्यु है। क्योंकि राजा साहब जागते ही जूता पहना करते हैं, और जूते में एक साँप बैठा है। यदि राजा साहब जागते हों तो सवेरे उसे मरवा डालें।"

राजा साहब पड़े पड़े चारों की बातें सुन रहे थे। सवेरा होते ही उन्होंने सिपाहियों को बुलवाकर उस साँप को मरवा डाला। फिर हुक्म दिया, "जाओ, अमुक जगह ख़ज़ाना गड़ा है, खोद लाओ।" सिपाही खोद लाये। फिर उसी सौदागरज़ादी के पति-मित्र का मुक़द्दमा आया। उसने उसको छुड़वा दिया और उसके बदले साधु को फाँसी दिलवाई। फिर उसने सिपाहियों से कहा, "उस बढ़ई

को, जिसने यह पलँग बनाया है, ले आओ।" सिपाही जीवन को ले आये। राजा ने उसे अपने पास बैठाला और कहा, "आज से तुम मेरे पुत्र हुए। मैं तुम्हारे साथ राजकुमारी का विवाह करके तुम्हें अपना दामाद बनाऊँगा। क्योंकि, तुमने मेरी जान बचाई और मुझे हीरा मोती दिलवाये। मैं तुम्हारा नाम जीवन बदल कर पृथ्वीपाल रक्खूँगा।" थोड़े दिनों बाद जीवन का राजकुमारी से विवाह हो गया। उसने अपने माता-पिता को रंगपुर से बुला कर राजा से परिचय कराया माता-पिता अपने खोये हुए पुत्र के इस ऐश्वर्य को देख कर आनन्द से गद्गद हो गये।

तब पृथ्वीपाल ने चतुरिया आदि को भी बुला लिया। चतुरिया का नाम बदल कर चतुरकुमारी रक्खा गया।

जीवन अनोखे पलँग के प्रभाव से पृथ्वीपाल बन गया।

सत्यश्चन्द्र मेहरोत्रा

———
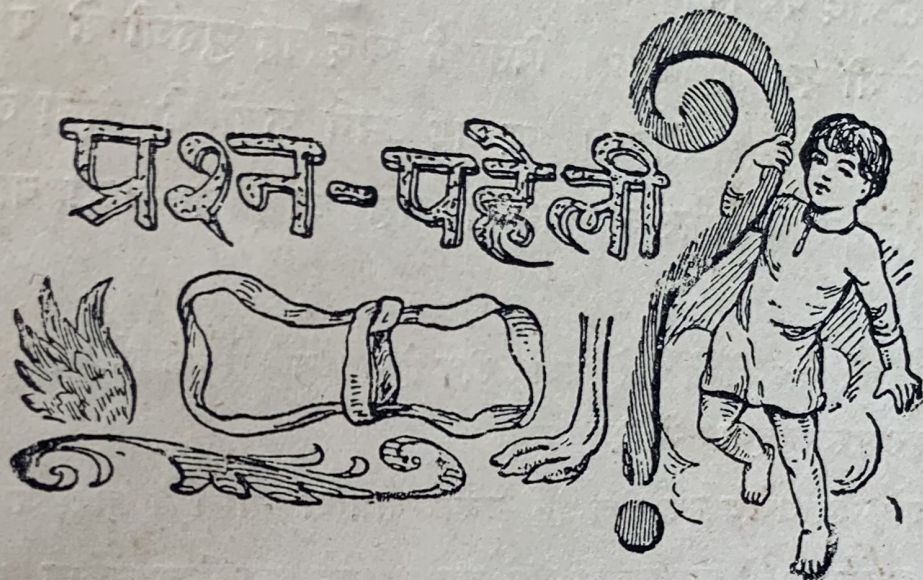
[१]

दो अक्षर का नाम हमारा।
सिर पर चढ़ना काम हमारा ॥

[२]

आसमान में रहता हूँ मैं, सूरज चाँद न तारा हूँ।
वन में भी है बास हमारा, पेड़ पहाड़ न चारा हूँ ॥
नदी नहर में रहता हूं मैं, मछली मुझे न कह देना।
मन में भी पाओगे अपने, सोच समझ उत्तर देना ॥

[३]

मैं तीन अच्चर का एक शहर हूँ। तीन अच्चर की एक नदी के किनारे आबाद हूँ। तीन अच्चर की जाति के एक मशहूर बादशाह ने एक बड़ी सुन्दर इमारत बनवा कर मेरा नाम तीन अच्चर के जीवों में अमर कर दिया है। बताओ मैं कौन शहर हूँ।

[४]

एक लड़का बाग़ से कुछ फल लाया और मा को आधा देकर उससे एक ले लिया। मा के बाद वह पिता के पास गया और जो उसके पास बचा था उसका आधा देकर उनसे भी एक ले लिया। पिता के बाद वह गुरुजी के पास गया और उनको भी आधा देकर एक ले लिया। पर जब उसने फलों को गिना तो उसके पास उतने ही निकले जितने कि लेकर वह बाग़ से चला था। बतलाओ वह कितने फल लेकर चला था।

नोट—(१) जिन बालकों के चारों जवाब ठीक होंगे उनमें से सबसे पहले जवाब भेजनेवाले को एक सुन्दर पुस्तक इनाम में दी जायगी।

(२) जिनके तीन जवाब तक ठीक होंगे उनका नाम बाल-सखा में छापा जायगा।

(३) जो बाल-सखा के ग्राहक नहीं होंगे उनको इनाम नहा मिल सकेगा और न उनका नाम ही छापा जायगा!

(४) जवाब भेजते समय बालक अपनी उम्र अवश्य लिखें।

जवाब भेजने का पता—

सम्पादक बाल-सखा,

इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

इलाहाबाद।

Printed and published by K. Mittra, at the Indian Press Ltd., Allahabad.

बालोपयोगी साहित्य

मनुष्य-विचार

जेम्स ऐलन की 'As a Man Thinketh' नामक महत्त्व-पूर्ण पुस्तक का यह हिन्दी-अनुवाद है। इस पुस्तक में वर्णित उपदेशों के अनुसार चलने से मनुष्य का जीवन सुख-मय तथा शान्तिमय बन सकता है और वह अपनी बुरी वासनाओं को छोड़कर अपना और दूसरों का बहुत कुछ उपकार कर सकता है। यह पुस्तक क्या स्त्री क्या पुरुष सभी के काम की है। मूल्य केवल ।)

कर्त्तव्य-शिक्षा

अर्थात्

महात्मा चेस्टरफ़ील्ड का पुत्रोपदेश

अपनी सन्तान को कर्त्तव्यशील बनाकर नीति-निपुण और शिष्टा-चार-परायण बनाने की जिन्हें इच्छा हो उन्हें यह "कर्त्तव्यशिक्षा" पुस्तक मँगा कर अपने बालकों के हाथ में ज़रूर देनी चाहिए। बालकों के ही क्यों, यह तो हिन्दी जाननेवाले मनुष्य-मात्र के काम की है। पौने तीन सौ पृष्ठ की पोथी का मूल्य केवल १।)

चमत्कारी बालक

इस पुस्तक में युधि-ष्ठिर, एकलव्य, गोखले आदि ऐसे २१ पुरुषों के विचित्र चरितों का संग्रह किया गया है जो कि अपने दिनों में खूब प्रसिद्ध हुए और जिनकी बदौलत उनकी जाति तथा देश को बहुत लाभ हुआ। भारत की भावी सन्तान इन चरित्रों को पढ़ कर बहुत कुछ शिक्षा ग्रहण करके अपना सुधार कर सकती है। मूल्य केवल ।=)

सदुपदेश-संग्रह

सब देशों के ऋषि, मुनि और महात्माओं ने अपने बनाये हुए ग्रन्थों में जो उपदेश लिखे हैं उन्हीं में से छाँट छाँट कर यह किताब बनाई गई है। इस पुस्तक में चार अध्याय और २४१ उपदेश हैं। सब तरह के मनुष्यों के लिए उपदेश हैं। उनसे सभी सज्जन, धर्मात्मा, परोपकारी और चतुर बन सकते हैं। मूल्य केवल ।=)

मिलने का पता—मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

चरित्रगठन

यह पुस्तक बड़े परिश्रम से तैयार कराई गई है। इसमें उस कर्तव्य का वर्णन विशेषरूप से किया गया है जिसका पालन करने से मनुष्य अपने समाज में आदर्श व्यक्ति बन सकता है। इसमें वर्णित एक एक उपदेश लाख रुपये का है। उन्नति, उदारता, सुशीलता, दया, क्षमा, प्रेम और प्रतियोगिता आदि अनेक विषयों का व न उदाहरण के साथ किया गया है। अतएव क्या बालक, क्या वृद्ध, क्या युवा, क्या स्त्री, सभी इस पुस्तक को एक बार अवश्य एकाग्र मन से पढ़ें और इससे लाभ उठावें। मूल्य केवल १)

मन की अद्भुत शक्ति

इसमें मन का स्थिर करना, मन की उत्पादन-शक्ति, विचार ही रसायन है, इच्छा या संकल्प, तू क्या होना चाहता है? अपने आस पास के विषयों पर चिन्तन-शक्ति का प्रभाव, पारस पत्थर आदि उपयोगी विषयों पर विचार प्रकट किये गये हैं। पुस्तक क्या है भाग्य फेरने की कुंजी है। इसके अनुसार विचार-शक्ति का निग्रह एवं उपयोग करने से मनुष्य जो चाहे हो सकता है। मूल्य केवल ॥=)

सुखमार्ग

पुस्तक के नाम से ही इसका विषय प्रकट है। जो लोग दुखी हैं और दिन-रात सुख की खोज में माथा-पच्ची किया करते हैं, उनके लिए यह पुस्तक बड़े काम की है। मूल्य केवल ।=) छः आने।

उज्ज्वल तारे

पुस्तक में ऐसे-ऐसे सात महापुरुषों के चरित्र हैं, जो अपने उच्चतम कार्यों के कारण भारतीय इतिहास में चिरस्मरणीय होगये हैं। उनके चरित्रों की महत्वपूर्ण घटनाओं का जानना विद्यार्थियों का कर्त्तव्य है, जिससे समय आने पर उन महापुरुषों के उच्चादर्शों को सम्मुख रख, तदनुकूल आचरण करते हुए अपने को जननी जन्म-भूमि का सच्चा सेवक बना सकें। मज़बूत बढ़िया काग़ज़ पर सफ़ाई और सुन्दरता के साथ छपी सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल १) एक रुपया।

गुलिस्ताँ

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने राजनैतिक और सामाजिक विषयों पर भी प्रकाश डाला है; कहीं कहीं पर साधारण शिक्षाओं को बड़ा मनोहर रूप दे दिया है। सारी पुस्तक कहानियों के रूप में लिखी गई है जिससे पुस्तक को समाप्त किये बिना उसे छोड़ने को जी नहीं चाहता। इस हिन्दी-संस्करण में आपको मुस्लिम-सभ्यता की परिपक्वावस्था का चित्र मिलेगा और एक ही ग्रन्थ के द्वारा आपको मुस्लिम-साहित्य से परिचय प्राप्त हो जायगा। भूमिका में शेख़ सादी के जीवनचरित्र और काव्य का विस्तृत वर्णन दिया गया है। मूल में यथेष्ट पादटिप्पणियाँ भी लगाई गई हैं, जिससे पुस्तक के असली अभिप्राय को समझने में कोई कठिनाई नहीं होती। मूल्य २) दो रुपया।

मिलने का पता—मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

बालोपयोगी मनोरंजक, सचित्र उपदेशप्रद उपाख्यान

बाल-दुर्गा

हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक सभी आस्तिक हिन्दुओं की आराधना का प्रधान अंग दुर्गापाठ है। जहाँ कहीं कुछ आपत्ति-विपत्ति, रोग-पीड़ा, मामला-मुक़दमा हुआ कि सप्तशती का पाठ प्रारम्भ किया गया। पर सप्तशती में जिस कथा का वर्णन है, जिन आपत्तियों के आने तथा उनसे छुटकारा पाने की शिक्षा है उससे बहुत थोड़े मनुष्य परिचित हैं। इसी कमी को पूरा करने के लिए यह पुस्तक प्रकाशित की गई है। इस पुस्तक में सप्तशती का भावानुवाद सरल हिन्दी भाषा में किया गया है। इसके पढ़ने से छोटे छोटे बच्चे तक भी समझ जायँगे कि दुर्गा कौन हैं? उनमें कितनी शक्ति है? उन्होंने कैसे कैसे दुष्ट दैत्यों का दमन किया है और किस प्रकार अपने भक्तों का उद्धार किया है? दुर्गा-पाठ में कैसी-कैसी वीरताओं की बातों का वर्णन है? इस पुस्तक को पढ़ कर उनकी बुद्धि और व्यवहार सुधर जायगा, साथ ही महामाया के प्रति उनकी भक्ति उत्पन्न हो जायगी और उनका हृदय बलवान् बन जायगा। पुस्तक में तीन-चार सुन्दर चित्र भी दिये गये हैं। मूल्य केवल ॥=) दस आना।

सती

इसमें दक्ष-सुता सती-शिरोमणि सती के अवतार की कथा बड़ी सरल, सुन्दर और मधुर भाषा में लिखी गई है। अपने पद के अभिमान से दक्षप्रजापति ने शिव-हीन यज्ञ करके आदिदेव महादेव का किस प्रकार अपमान करने का साहस किया, सती ने कैसी धीरता के साथ पिता को समझाने का प्रयत्न किया, अन्त में पति का अपमान न सह सकने के कारण उन्होंने किस प्रकार अपने प्राणों का बलिदान कर दिया, अन्त में अहङ्कार के कारण दक्ष का किस प्रकार पतन हुआ, इत्यादि बातें बड़ी ही रोचक और सरस भाषा में लिखी गई हैं। मूल्य ।-) पाँच आने।

युधिष्ठिर

इस पुस्तक में महाभारत के पाण्डु-पुत्र धर्मराज युधिष्ठिर की धर्म-गाथा, अलौकिक कीर्ति, उनका आदि से अन्त तक सम्पूर्ण महत् और उज्ज्वल चरित लिखा गया है। महाराज युधिष्ठिर के चरित के साथ साथ सारे महाभारत पढ़ने का भी आनन्द मिलता जाता है। पुस्तक सरल भाषा में अच्छे सफ़ेद काग़ज़ पर छापी गई है और कई सुन्दर चित्र भी लगाये गये हैं। ऐसी ऐसी पुस्तकें मँगाकर प्रत्येक माता-पिता को अपनी सन्तानों के हाथ में अवश्य देना चाहिए। मूल्य केवल ।=) छः आने।

पता—मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

पढ़कर घर-बैठे संसार की सैर कीजिए और विचित्र स्थानों तथा वस्तुओं के चित्र देखिए।

भू-प्रदक्षिणा

इस पुस्तक को पढ़ते समय आपको ऐसा मालूम होगा जैसे आपका कोई मित्र पृथ्वी की परिक्रमा करके आया हो और बड़े ही रोचक ढङ्ग से भिन्न-भिन्न देशों की रीति-रस्म, बालक-बालिका, नदी-पहाड़ आदि के सम्बन्ध में कौतूहल-वर्द्धक बातें आपको सुना रहा हो। पृथ्वी के एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक की चित्र-विचित्र वस्तुओं के मनोहारी वर्णन तथा महत्त्वपूर्ण स्थानों और वस्तुओं के सुन्दर नयनाभिराम चित्रों के कारण पाठकों को ऐसा जान पड़ता है जैसे वह मूल वस्तु को ही अपनी आँखों से देख रहा है। इसके पन्ने उलटते ही धन-धान्य, व्यापार-व्यवसाय के केन्द्र, विशाल नगरों के दृश्य आँखों के सामने नाचने लगते हैं, किस देश के लोगों का स्वभाव कैसा होता है, समाज में कैसे कैसे फ़ैशन प्रचलित हैं, कहाँ की भूमि उपजाऊ है, कहाँ की नहीं, विभिन्न स्थानों के पेड़-पौधों में क्या विशेषता होती है—ये सब बातें 'भू-प्रदक्षिणा' की सहायता से आप घर-बैठे मालूम कर सकते हैं।

पृष्ठ-संख्या ७८० ◎ चित्र-संख्या ३७

मनोरम जिल्द ◎ मूल्य केवल ५)

मिलने का पता—

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

बाल-सखा के नियम।

(१) बाल-सखा मासिक पत्र है। इसका वार्षिक मूल्य २॥) और एक प्रति का मूल्य -) है।

(२) पत्र-व्यवहार करते समय ग्राहकों को अपना ग्राहक-नंबर अवश्य देना चाहिए। नाम, पता और ग्राहक-नंबर साफ़ साफ़ न लिखने से उनकी आज्ञा का पालन न हो सकेगा। पत्र-व्यवहार **'मैनेजर, बाल-सखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग'** के पते से होना चाहिए।

(३) जिन सज्जनों को किसी मास का बाल-सखा न मिले उन्हें पहले अपने डाकघर से पूछना चाहिए। अगर पता न लगे तो डाकघर से जो उत्तर आवे उसे हमारे पास—जिस महीने की संख्या न मिली हो उसके अगले महीने की १५ तारीख़ तक भेजें। उनको दूसरी संख्या भेज दी जावेगी। अगर ऐसा न किया गया तो संख्या बिना मूल्य न मिल सकेगी। बाल-सखा यहाँ से दो बार अच्छी तरह जाँच कर रवाना किया जाता है। अतएव इस विषय में पहले डाकघर से ही पूछताछ करना अच्छा होगा।

(४) यदि एक दो मास के ही लिए पता बदलवाना हो तो डाकख़ाने से प्रबन्ध कर लेना चाहिए। यदि सदा के लिए बदलवाना हो तो उसकी सूचना हमें अवश्य देनी चाहिए।

(५) लेख, समालोचना के लिए पुस्तकें और बदले के पत्र आदि 'सम्पादक, "बाल-सखा", इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग'—के पते से भेजने चाहिएँ।

(६) किसी लेख अथवा कविता के प्रकाशित करने या न करने तथा उसे लौटाने या न लौटाने का अधिकार सम्पादक को है। लेखों के घटाने-बढ़ाने का भी अधिकार सम्पादक को है। जो लेख सम्पादक लौटाना मंजूर करें उसका डाक और रजिस्टरी का ख़र्च लेखक को भेजना होगा। **अधूरे तथा राजनीति से सम्बन्ध रखने वाले लेख नहीं लिये जाते।**

बाल-सखा में विज्ञापन।

विशेष स्थानों में विज्ञापन की छपाई:—

		प्रतिमास
कवर का दूसरा पृष्ठ	१६)	"
" " " एक कालम	१०)	"
" " तीसरा पृष्ठ	१६)	"
" " " एक कालम	१०)	"
" " चौथा पृष्ठ	२१)	"
" " " एक कालम	१२)	"
पाठ्य विषय के अन्त का, सामनेवाला, पूरा पृष्ठ	१४)	"
" " " " एक कालम ...	८)	"
कवर के द्वितीय पृष्ठ के सामनेवाला पृष्ठ	१४)	"
" " " " एक कालम ...	८)	"
रङ्गीन चित्र से पहलेवाला पृष्ठ ...	१४)	"
" " " " एक कालम ...	८)	"
कवर के तीसरे पृष्ठ के सामनेवाला पृष्ठ	१४)	"
" " " " एक कालम ...	८)	"
लेख-सूची के नीचे १/२ पृष्ठ	८)	"
" " " १/२ कालम ...	४)	"
" " " १/४ "	३)	"

साधारण नियम:—

१ पृष्ठ या २ कालम की छपाई	१२)	प्रतिमास
१/२ " या १ " " ...	७)	"
१/४ " या १/२ " " ...	४)	"
१/८ " या १/४ " " ...	२)	"

१—विज्ञापन बिना देखे नहीं छापा जाता।

२—एक कालम या इससे अधिक विज्ञापन छपानेवाले को बाल-सखा बिना मूल्य भेजा जाता है। औरों को नहीं।

३—विज्ञापन की छपाई पेशगी ली जाती है।

४—साल भर के विज्ञापन की छपाई एकमुश्त पेशगी देनेवालों से =) फ़ी रुपया कम लिया जायगा।

पत्र-व्यवहार इस पते से कीजिए—

मैनेजर, बाल-सखा,

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

BALSAKHA Registered No. A794